B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-2
HISTORY (SUB./GEN.)
UNIT-5(B)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KR.MISHRA
DATE-14/09/2020

TOPIC- सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930 ई.)

(CIVIL DISOBEDIENCE MOVEMENT (1930 AD)

Part-1

Scanned with CamScanner

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930 ई०)

पृष्ठभूमि

A.) साम्राज्यवादी विरोधी मनोदशा की अभिव्यक्ति अनेक रूपों में हुई जैसे साइमन विरोधी आंदोलन, साम्यवादियों के नेतृत्व में कामगारों द्वारा उग्र विरोध क्रांतिकारी आतंकवाद का पुनर्जीवित होना। 1929 ई० की वैश्विक आर्थिक मंदी एवं उससे उत्पन्न तनाव।

B.) नेहरू रिपोर्ट को सरकार द्वारा अस्वीकार किया जा चुका था।

C.) 1927 ई० में नेहरू एवं बोस ने मद्रास कांग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वतंत्रता संबंधी प्रस्ताव पेश किया।

D.) 1929 ई० की आर्थिक मंदी ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव डाला। भारत का निर्यात कम हो गया। निर्यात योग्य नकदी फसलों के दाम तेजी से गिरे जिससे धनी किसान प्रभावित हुए। मूल्यों में बेहद वृद्धि हुई। भारतीय पूँजीपतियों के हित साम्राज्यवादियों के साथ टकरा रहे थे फलतः जनता, किसान और पूँजीपति सभी असंतुष्ट थे।

E.) मेरठ षड्यंत्र केस, लाहौर षड्यंत्र केस ने सरकार विरोधी असंतोष को उग्र किया। इससे हिंसा व भय का वातावरण व्याप्त हो गया। किसान, मजदूर व क्रांतिकारियों के बीच समान दृष्टिकोण बनते जा रहे थे फलतः गाँधी ने शांतिमय सविनय अवज्ञा के माध्यम से संघर्ष का रास्ता दिखाया।

F.) 1929 ई० के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित किया गया इसमें कहा गया कि ब्रिटिश शासन को स्वीकार करना मनुष्य एवं ईश्वर दोनों के प्रति पाप करना है।

G.) 26 जनवरी 1930 ई० को पूर्ण स्वतंत्रता दिवस मनाने की घोषणा की गई और गाँधी जी को सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करने का अधिकार दिया गया।

H.) गाँधी ने आंदोलन से पूर्व वायसराय इरविन के समक्ष 2 मार्च 1930 को 11-सूत्रीय मांगें पेश की तथा कहा कि इन्हें यदि स्वीकार करती है तो आंदोलन नहीं छेड़ा जायेगा किन्तु इरविन ने इन मांगों को अस्वीकार कर दिया।

Pankaj
14/09/2020

Scanned with CamScanner